आत्मिक भाव का आईना... दीपावली

अयोध्या एक अध्याय है, एक पाठ है, एक अनुभव है हम सभी आत्मा रामों के लिए, जो विकार मुक्त होकर एक साथ ज्योति स्वरूप में इकट्ठे होते हैं, तो उस स्थान की शोभा बदल जाती है। इसी को रामचरितमानस में दर्शाया गया कि रावण पर विजय प्राप्त करना मतलब जड़ से उन विकारों की आहुति देकर जो निरंतर परमात्मा राम के साथ जीवन बिताता है तो उसका अध्याय पूरा हो जाता है।

प्रथम अध्याय, मैं कौन हूँ? अंतिम अध्याय, मेरे अंदर कितनी श्रेष्ठता है, दिव्यता है? इसी का यादगार दीपावली पर्व है। जितने भी चरित्र हैं राम के साथ युद्ध में शामिल होने वाले, सब इस दीपावली पर्व के साथ जुड़े हुए हैं। आप देखो, जब श्रीराम का अयोध्या में आगमन होता है, तो उनके साथ रावण से युद्ध में सहयोगी बनने वाले सुग्रीव, हनुमान, जामवंत, नल-नील, अंगद, विभीषण, भील आदि सब आये। ये सब यादगारें हैं कि राम राज्य में राजा भी अपनी आत्मिक स्थित में या ज्योति को जगाया हुआ रहेगा और उसके साथ चाहे वो जानवर है, चाहे वो निचले तबके का है, वो सब भी उसके साथ शामिल होंगे। तो राजा भी सुखी और प्रजा भी सुखी। उसका यादगार, इतने सारे रिच्छ, वानर राम के साथ अयोध्या में उनके साथ उत्सव में शामिल हुए। राम दीपराज हैं जो दीपावली पर सबसे बड़ा दीपक बीच में रखा जाता है, उसके साथ चारों तरफ से रखे छोटे-छोटे दीपक जो दीप राज के प्रकाश से ही प्रकाशमान कहे जाते हैं, वो इन्हीं के यादगार हैं जो राम के साथ सहयोगी बने। एक गिलहरी से लेकर के बुद्धिमान मानव तक, सभी राम के साथ उस युद्ध में शामिल दिखाये जाते हैं। भावार्थ ये है कि इस दुनिया में चाहे कोई कितना भी बुद्धिमान हो, उसे भी परमात्मा की बुद्धि के सामने अपनी बुद्धि को समर्पित करना पड़ता है।

आपको याद हो कि दीपावली के दिन सुबह-सुबह घर से दरिद्रता को हटाने के लिए एक सूप जिससे अनाज को साफ करते हैं, उसको लेकर मातायें-बहनें घर के कोने-कोने में जाती हैं और बोलती हैं कि ईश्वर आये और दरिद्रता जाये। तो इसका यादगार भी तो यही है कि जितनी भी दरिद्रता थी सबकी, जब राम जंगल से गुज़रे तो किसी पत्थर को मुक्ति दे दी, शबरी को मुक्ति दे दी, राक्षसों को भी मुक्ति दे दी, तो ये यादगार आत्मा राम की ही है जो अपनी वैल्यूज़ से, गुणों से सम्पन्न बन जाती है तो जिस किसी को भी छूती है, जिस किसी के भी संपर्क में आती है, उन सभी की आत्मिक ज्योति जग जाती है। तो ये दीपावली पर्व सभी पर्वों का सार है, क्योंकि अंधकार से मुक्ति, मन के अंधकारिक भाव से मुक्ति को दर्शाता है। मन आज कुंठित है, व्यथित है, परेशान है, तो उसको ज्ञान के भाव से प्रकाशमान कर देना, उसको इतनी गहरी समझ देना, रक्षासूत्र बांधकर उसको पवित्रता का भाव दे देना और निरंतर प्रैक्टिस करना हमारे प्रकाशमान भाव को दर्शाता है।

इसीलिए इस दीपावली पर हम सभी को एक-दूसरे की आत्मिक ज्योति जगाने की, उसको सार्थकता के साथ आगे बढ़ाने की, सभी को अंधकारमय स्थिति से बाहर निकालने की और उसको अपनी सही पहचान दिलाकर सही रूप से पहचान कराने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। जिससे सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय हो सके।

दिल की बात

बाबा(परमात्मा) हमें कहते हैं कि बच्चे, स्वयं के महत्व को समझो। तुम विश्व की आधारमूर्त आत्माएं हो। अर्थात् तुम्हारी स्व स्थिति ही विश्व में परिवर्तन करेगी।

तुम्हारे संकल्पों का बहुत महत्व है। जब तुम हलचल में होते हो तो विश्व की आत्माएं हलचल में आ जाती हैं। और तुम्हारी शांत स्थिति से वो शांत हो जाती हैं। और उनकी विश्व परिवर्तन करने की क्षमता बढ़ जाती है अर्थात् वो शांत हो व एकाग्र हो अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर आगे से आगे नए-नए आविष्कार कर दुनिया को अति की तरफ ले जाने में सफलता प्राप्त करती है। फिर अति के बाद ही अंत होगा।

इसलिए अपने संकल्पों की एकाग्रता को बढ़ाओ। संकल्पों को एकाग्र करना और अपने ऊंच स्वमान में स्थित हो विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करना। देखो बच्चे, बाप व बाप की श्रीमत को महीनता से समझो। जैसे बाबा कहता है कि बालक सो मालिक बन जाओ, अर्थात् पहले बाप के छोटे से बालक बन जाओ, जिस बालक की सारी ज़िम्मेवारी बाप की होती है अर्थात् उसे क्या खिलाना है, क्या पहनाना है अर्थात् वो बच्चा 100प्रतिशत बाप पर डिपेंड होता है और मालिक बन जाओ अर्थात् अपनी कर्मेन्द्रियों के मालिक बन विश्व परिवर्तन के कार्य की ज़िम्मेवारी समझ अपने एक-एक संकल्प को सफल करो।

अपने को साधारण नहीं समझो। तुम हो परमात्मा बाप के वी.वी.आई.पी. बच्चे, इसलिए अपने एक-एक कदम के महत्व को समझ आगे से आगे बढ़ो।

बच्चे, बाप ने आपको पुरुषार्थ की विभिन्न विधियाँ बताई हैं, जो आपको ही करनी पड़ेंगी। यह समय जो कल्प का अन्तिम समय जा रहा है तो हिसाब-किताब, कमी-कमज़ोरी सब बाहर निकल कर आ रही है इसलिए इस पर ज़्यादा विचार न कर विधि से सिद्धि को प्राप्त करो।

नई दिल्ली। टोक्यो ओलम्पिक्स 2020 में सिल्वर मेडलिस्ट व्हेटलिफ्टर साइखोम मीराबाई चानू को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. सुनीता दीदी तथा ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके। साथ ही उन्हें रक्षासूत्र बांधकर परमात्म परिचय दिया तथा माउंट आबू आने का निमंत्रण भी दिया। इस मौके पर ब्र.कु. संजय भाई तथा ब्र.कु. पिंकी बहन उपस्थित रहे।

राँची-हरमू रोड(झारखण्ड)। राज भवन में राज्यपाल महोदय रमेश बैस को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला दीदी।

शिमला-हि.प्र.। माननीय मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रजनी बहन। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. भारत भूषण भाई तथा अन्य।

जयपुर-राजापार्क(दुर्गापुरा)। विधायक कालीचरण सर्राफ,मालवीय नगर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सन्नू बहन।

ब्रह्मपुर-बडा बज़ार। सांसद चंद्र शेखर साहू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. संजुक्ता बहन।

शांतिकुण्ड-ब्रह्मपुर(ओडिशा)। एस.पी. पिनाकी मिश्र,आई.पी.एस. को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी।